वाणी दोष वाले बालक(Speech Defective Children)

वाणी दोष-जब वाणी और भाषा में व्याकरण से संबंधित नियमों का पालन नहीं होता है और शब्दों का प्रयोग बुद्धिमत्ता से नहीं होता है या ऐसे शब्दों का प्रयोग होता है जो सुसंस्कृत और शालीन नहीं समझे जाते हैं ऐसी अवस्था में वाली दोषपूर्ण मानी जाती है।

वाणी दोष विशेषताएं-

1-यह प्रायः बच्चों की आयु , लिंग और शारीरिक विकास के अनुरूप नहीं होता है।

2-ऐसी वाणी सरलता से सुनाई नहीं देती है।

3-भाषा शास्त्र के अनुसार भी दोष युक्त वाणी दोष पूर्ण होती है।

4-भाषा के पारस्परिक उतार-चढ़ाव और जरूरी दबाव की कमी पाई जाती है।

5-ऐसी वाणी आसानी से समझ में नहीं आती है।

वाणी दोष के कारण-

1-श्रवण शक्ति में कमी

2-सामाजिक प्रभाव

3-मनोवैज्ञानिक कारण

4-मस्तिष्क पक्षाघात

5-आंशिक कारण

6-मनोदैहिक कारण

7-क्रियात्मक कारण

कुछ अन्य दोष या कारण-

1-प्रक्रियात्मक उच्चारणात्मक दोष

2-हकलाना

3-आवाज की समस्या

4-अंगीय कारण या अंगीय बोलने के दोष

5-कम सुनने वाले बालकों के साथ बोलने की समस्या

6-देर से बोलने का विकास

वाणी दोष के प्रकार-

1-कटा हुआ होठ या तालू

2-दोषपूर्ण उच्चारण

3-देर से वाणी विकास

4-दोषपूर्ण स्वर

5-अटकना और हकलाना

वाणी दोष वाले बच्चों की समस्याएं-

1-निम्न शैक्षिक उपलब्धि

2-निम्न बौद्धिक विकास

3-स्वरों में अंतर करने की योग्यता में कमी

4-दूसरों से संपर्क में असुविधा

5- आत्मविश्वास में कमी

6-पलायन की प्रवृत्ति

7-कुसमायोजन

8-सीमित वाचन क्षमता

9-गलत उच्चारण

वाणी दोष वाले बच्चों का उपचार-

वाणी दोष वास्तव में इतना गंभीर दोष नहीं होता है कि वह बच्चों के संपूर्ण व्यक्तित्व को ही प्रभावित कर दें। और यह दोष इतने गंभीर भी नहीं होते हैं कि उनका उपचार संभव ना हो पाए। ज्यादातर वाणी दोषों का उपचार हमारे यहां संभव है। इनका उपचार करने के लिए मनोवैज्ञानिक शिक्षक डॉ और अभिभावकों सबको मिलकर अपनी अपनी सहायता देनी चाहिए।

उपचार के उपागम-

1-लक्षणात्मक उपचार

2-मनोचिकित्सा

उपचार की विधियां-

1-चिकित्सीय उपचार

2-वाणी चिकित्सा

3-वाणी प्रशिक्षण

वाणी दोष वाले बच्चों की शिक्षा-

1-शैक्षिक और व्यवसायिक निर्देशन

2-पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन